International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(3): 05-06

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(3): 05-06
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 02-03-2018
Accepted: 03-04-2018

तपन विश्वास
शोधच्छात्र, एम. फिल्. संस्कृत सेमेस्टर –द्वितीय डॉ.सी.वी.रामन विश्वविद्यालय करगीरोड़, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

डॉ. रेनू शुक्ला
निर्देशिका, सहायक प्राध्यापिका संस्कृत विभाग डॉ. सी.वी.रामन विश्वविद्यालय करगीरोड़, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Correspondence
तपन विश्वास
शोधच्छात्र, एम. फिल्. संस्कृत सेमेस्टर –द्वितीय डॉ.सी.वी.रामन विश्वविद्यालय करगीरोड़, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में आंगिक एवं वाचिक अभिनय के स्वरूप का अध्ययन

तपन विश्वास, डॉ. रेनू शुक्ला

प्रस्तावना

अभिज्ञानशाकुन्तलम् महाकवि कालिदास का विश्वविख्याति लब्ध नाटक है। जिसका अनुवाद लगभग सभी विदेशी भाषाओं में हो चुका है। जिसमें दुष्यन्त तथा शाकुन्तला के प्रणय की कथा है। इसकी कथावस्तु पौराणिक है। इसके समस्त पात्र ऐतिहासिक है।

रसिको के मनोरंजन हेतु इस नाट्य परम्परा का निर्वाह करते हुए महाकवि कालिदास ने इस नाटक को सुखान्त बना दिया है। शास्त्र प्रणेता एवं नाट्य प्रायोगिक भरतमुनि द्वारा नाट्य कला प्रायोगिक एवं सैद्वान्तिक दोनों ही पक्षों को बतलाया गया है नाट्य को अभिनय ही पूर्ण करता है या यूँ कहे कि नाट्य ही अभिनय ही पूर्ण करता है तो कुछ अतिशयोक्ति नही होगी अभिनय अपने भावों का अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम तो है ही बल्कि प्रजा रंजन के साथ–साथ सामाजिकों सन्देश पहुँचाने में भी महत्वपूर्ण सिद्व होता है क्योंकि अभिनय द्वारा काव्य नाट्य होकर रस की सिद्वि करता है। जो सामाजिकों को रसानुभूति कराता है। अभि उपसर्ग है। णी धातु प्रा पर्णार्थक णी ञ धातु है उसमें अच् प्रत्यय लगाने पर अभिनय बना है।

अभिनय शब्द के अर्थ को इस प्रकार व्यक्त किया गया है–

> अभिपूर्वस्य णीञ धातुराभिमुख्यार्थ निर्णये।
> यस्मात् प्रयोग नयति तस्मादभिनयः स्मृतः।।[1]

इसका अर्थ यह है कि यह मुख्य प्रयोजन को प्रयोग की ओर ले जाता है अतः इसे अभिनय कहते है। अभिनय शब्द का एक और अर्थ आगे लिखे श्लोक में मिलता है –

> विभाव यति स्माच्च नानार्थन हि प्रयोगतः।
> शाखाग्डो पाग्ड् संयुक्तस्मादभिनयः स्मृताः।।[2]

अर्थात्
इस श्लोक मे यह कहा गया है कि – अनेक अर्थों को नाट्य प्रयोग द्वारा शाखा अंग उपांग से युक्त प्रदर्शित करना अभिनय है।

इस प्रकार से भरतमुनि ने अभिनय के चार प्रकार बतलाये है–

> आंगिकों वाचिकश्चैव आहार्य सात्विकस्तथा।
> ज्ञेयस्तवभिमयों विप्राश्चतुर्द्वा परिकीर्तितः।।[3]

अभिनय के प्रकार

1. आंगिक अभिनय
2. वाचिक अभिनय
3. सात्विक अभिनय
4. आहार्य अभिनय

इससे तात्पर्य यह है कि – नाट्य में प्रयुक्त अभिनय चार प्रकार का होता है और इसी अभिनय में अनेक प्रकार से विस्तीर्ण स्वरूप को प्राप्त करने वाला नाट्य स्थिर रहता है।

आंगिक अभिनय का स्वरूप

अंगों और उपांगों की चेष्टाओं द्वारा लोकवृत्त का अनुकरण करते हुए सौन्दर्य सृष्टि के द्वारा भावान्वेष करना आंगिक अभिनय के अन्तर्गत आता है –

त्रिविधस्त्वाग्ङिको ज्ञेयः शरीरो मुखजस्तथा।
तथा चेष्टाकृतश्रैचत्व शाखाग्डोपाग्डसंयुक्तः।।[4]

अर्थात् अंगों द्वारा निश्पन्न होने वाला अभिनय आंगिक अभिनय है। भरतमुनि ने तीन प्रकार के आंगिक अभिनय का विधान किया है –

शिरोहस्त कटीवक्षः पार्श्वपादसमन्वितः।।[5]

इस प्रकार से अंग, उपांग, प्रत्यंग और शरीर मुखज तथा अंगों पांङ युक्त चेश्टाकृत अभिनय अंग उपांगों की संख्या छः–छः है वे निम्नलिखित है –

अंग – सर, हाथ, वक्ष, पार्श्व, कटी और पाद।

उपांग – नेत्र, भ्रू, नासिका, अधर, कपोल और चिबुक।[6]

नाट्य शास्त्र में यह भी निर्देशित है कि अंग–उपांग का अभिनय किस अवसर पर और कैसे प्रभावोत्पादक हो सकता है। मनुष्य के अंगों में नासिका, अधर, कपोल और चिबुक आन्तरिक भावों के प्रकाशन के बड़े प्रशस्त माध्यम है। मनुष्य के हृदय में उठते हुए भावों की हिलोर अंगों के तटों पर एक लहर की रेखा अंकित कर देती है। नासिका के छः और चिबुक के सात और ग्रीवा के नौ कर्मो का भरत में उल्लेख किया है।

भ्रमण वलनं पातश्चलनं सम्प्रवेशनम्।[7]
विवर्तनं समुद्रवृतं निश्क्रामः प्राकृतं तथा।।[8]

1. समा 2. नता 3. उनन्ता 4. त्रयरत्रा 5. रेचिता 6. कुच्चिता 7 अच्चिता 8. बलिता 9. विवृत्ता।

इन सभी कर्मों का विधिवत परिपाक – वियोग श्रृंगार, वीर, करूण तथा रौद्र आदि में मिलता है।

सम्पूर्ण अभिनय में हस्त अभिनय का महत्व सर्वोपरि है। अभिनय की दृष्टि से ऐसा कोई नाट्य धर्म नही है, जिसका रूप देने में हस्त अभिनय का प्रयोग न होता हो और इसकी दो मुद्रायें होती है। हस्त अभिनय द्वारा मानव हृदय की आशा–निराशा, सुख–दुःख, हर्ष– शोक सशक्ता और दीनता आदि की अभिव्यंजना होती है।

भरतमुनि द्वारा आंगिक अभिनय के स्वरूप में जीव–जन्तुओं का भी नाट्य में प्रयोग किया गया है। आंगिक अभिनय 13 प्रकार का संयुक्त हस्त अभिनय 24 प्रकार का असंयुक्त हस्त अभिनय 64 प्रकार का बतलाया गया है। इसके अतिरिक्त वक्ष के 5 जंघा के 5 उदर के 3 कटि के तथा उरू के 5 प्रकार के अभिनय बतलाये है। भरत ने 16 भूमिचारियों, 16 आकाशचारियों का वर्णन करके 10 आकाश मण्डल और भौम मण्डल का परिचय देते हुए गति के अभिनय का विस्तार से वर्णन किया है। किस प्रकार के व्यक्ति की मंच पर भूमिका किस रस में, किस गति में होनी चाहिए आदि का आंगिक अभिनय में विस्तृत वर्णन किया गया है –

नाट्य धर्मो प्रवृत्तं हि सदा नाट्यं प्रयोजते।।[9]

अर्थात् आंगिक अभिनय के प्रदर्शन के बिना दशकों को प्रसन्न कर पाना असम्भव है।

वाचिक अभिनय के स्वरुप का अध्ययन

भरत द्वारा बताये गए चार अभिनयों में वाचिक अभिनय प्रधान अभिनय है। भारतीय रंगमंच परम्परा काव्य और रस की दृष्टि से प्रधान रही है। अतएव वाचिक अभिनय का सारा व्यापार इसी आधार पर किया जाता है। नाट्य में रस की निष्पत्ति प्रधान रुप से संवादों और अन्य प्रकारों के वागाभिनय के द्वारा ही होती है। दूसरे प्रकार के कायिक, सात्विक और आहार्य अभिनय वाचिक अभिनय के सहयोगी बनकर ही रस निष्पत्ति में सहायता प्रदान करते है। इसी लिए भरत मुनि ने वागाभिनय को शरीर का नाट्य बतलाया है।

वाचियत्न स्तुकर्तव्यों नाट्य स्यैषा तनूः स्मृता।[10]
वाङम्यानीह शास्त्राणि वाङनिष्ठानि तथैवच।
तस्माद्वाचः परं नास्ति वग्धि सर्वस्य कारणम्।।[11]

अर्थात् इस जगत में सभी शास्त्र वाङमय शब्दात्मक शब्दनिष्ठ है। इससे अभिनेता को चाहिए कि संवाद या शब्द पर विशेष प्रयत्न करें। वाचिक अभिनय के अन्तर्गत नाम, अख्यात, निपात, उपसर्ग, तद्वित, समास, सन्धि, विभक्ति से सम्बन्ध होता है।

नाट्य दर्पणकार के अनुसार – क्रोध, अंहकार, जुगुप्सा, उत्साह, विस्मय, हास, रति, भय, शोक, सुख, दुःख, मोह, लोभ, माया, स्तम्भ, मूच्छा आदि भावों का अतिक्रमण करते हुए वक्ता के भाव के अनुसार उसकी वाणी का अनुकरण वाचिक अभिनय कहलाता है।[12] वाणी सर्वव्यापिनी है तथा सर्जना शक्ति से सम्पन्न है ऐसा ऋग्वेद के वाक सूक्त में उल्लिखित है।[13] अभिनव दर्पण में वाचिक अभिनय का लक्षण करते हुए कहा गया है कि अभिनेता अपने उच्चारण अवयवों के द्वारा जब अपनी पाठ्य सामग्री को रंगमंच पर प्रस्तुत करता है। तो वह वाचिक अभिनय है। इस प्रकार से काव्य और नाट्य के सम्पूर्ण शब्दात्मक रुप का सम्बन्ध वाचिक अभिनय से है।[14]

वाचिक अभिनय के शिथिल होने पर अन्य अभिनयों का प्रयोग सुरुचिपूर्ण नही बन सकता है क्योंकि समास, तद्वित, विभक्ति, सन्धि, आदि का समुचित रीति से उच्चारण करना इत्यादि बातें अभिनय का प्रमुख अंग है। परन्तु इन बातों से ही केवल अभिनय पूर्ण नही होता शारीरिक वाचिक अभिनय भी अपूर्ण रहते हैं। जब तक अन्य अभिनय की रचना न हो उच्चारण पर ध्यान देना आवश्यक है। उच्चारण अशुद्व होने पर रस भंग निश्चित है। भाषा पात्रानुकूल प्रयोग करनी चाहिए। विभिन्न पात्रों के अनुसार विभिन्न भाषाओं के प्रयोग का नियम है।

सन्दर्भ सूची

1. नाट्यशास्त्र भाग पृष्ठ–4
2. नाट्यशास्त्र भाग पृष्ठ–2
3. नाट्यशास्त्र श्लोक 81
4. नाट्यशास्त्र भाग पृष्ठ–4
5. नाट्यशास्त्र –8/12
6. नाट्यशास्त्र –8/13
7. नाट्यशास्त्र –8/95
8. नाट्यशास्त्र –8/96
9. नाट्यशास्त्र –18/2
10. नाट्यशास्त्र –14/2
11. नाट्यशास्त्र –15/3
12. नाट्यशास्त्र पृष्ठ–167
13. ऋग्वेद 10/71
14. अभिनव दर्पण पृष्ठ 39